अध्याय 30

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा. प्रार्थना के साथ अपने समूह, शिष्यों का निर्माण करने वाले इस पाठयक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौपें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[एकान्त समय]* **निर्गमन 4:1-7:13**

आगे बढ़कर (या अपने नोट्स में से **पढ़**) संक्षेप में ***बताएं*** कि अपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (निर्गमन 4:1-7:13)से क्या सीखा।
अपने अभुभव का वर्णन करने वाले जन की सुने, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (20मिनट) *[सुसमाचार]* **पाप का प्रायश्चित :रोमियों 5:8**

क-ध्यान करना

रोमियों 5:6-10 पढ़ें। "क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिए मरा। किसी धर्मी जन के लिए कोई मरे,यह तों दुर्लभ है; परन्तु हो सकता है कि किसी भले मनुष्य के लिए कोई मरने का साहस भी करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा। अत: जब कि हम अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से क्यों न बचेगें? क्योंकि बैरी होने की दशा में उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ, तो फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएँगे? केवल यही नहीं परन्तु हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, जिसके द्वारा हमारा मेल हुआ है, परमेश्वर में आनन्दित होते हैं।

निम्नलिखित याद करने वाले को वचन को श्वेत/श्याम पट पर लिखें

पाप का स्वभाव रोमियों 5:8
क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिए मरा। रोमियों 5:8

अपने कार्ड के पीछे बाइबल के पद लिखें:

1. परमेश्वर का प्रेम।

परमेश्वर हमसे कैसे प्रेम करता है? परमेश्वर हमें केवल बातों द्वारा ही नहीं बल्कि कामों द्वारा प्रेम करते हैं। रोमियों 5:8 में परमेश्वर सबसे बड़ा बलिदान चढ़ाने के द्वारा हमें प्रेम करते हैं। परमेश्वर ने यीशु मसीह में होकर मानव रूप धारण किया और यीशु मसीह में होकर परमेश्वर ने हमारे लिए अपनी जान दे दी। परमेश्वर ने यीशु मसीह में होकर हमारे पापों के प्रायश्चित के रूप में अपनी जान को दे दिया।

2. यीशु मसीह की मृत्यु।

यीशु मसीह किस प्रकार को मृत्यु मरे?

यीशु मसीह अपने व्यक्तिगत पापों की वजह से नहीं मरे।

पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है (रोमियों 6:23) और इसके कारण शरीर व प्राण अलग हो जाते हैं सभोपदेशक 12:7)। लेकिन यीशु मसीह के मरने की वजह ऐसी नहीं थी, क्योंकि वह निष्पाप था (इब्रानियों 4:15)।

मृत्यु के समय परमेश्वर उसे भूला नहीं था।

अनन्त मृत्यु में परमेश्वर मनुष्य को हमेशा के लिए भूल जाते हैं (मत्ती 25:46; 2 थिस्लुनिकियों 1:8-9; प्रकाशितवाक्य 21:8)। यीशु मसीह की मृत्यु से पहले परमेश्वर ने उसे हमारे पापों के कारण त्याग दिया था (मत्ती 27:46)। लेकिन परमेश्वर ने न तो मृत्यु के समय और उस दौर में यीशु को न तो छोड़ा और न अपने प्रेम व भलाई को उसके ऊपर से उठाया। यीशु मसीह क्रूस पर मृत्यु के समय, निराश नहीं हुआ, बल्कि उसने परमेश्वर पिता से प्रार्थना की और अपने प्राण को उसके हाथों मैं सौंप दिया (लूका 23:46)। और जब उसकी देह कब्र में थी, तब भी उसका मानवीय स्वभाव उसके ईश्वरीय स्वभाव से अलग नहीं हुआ क्योंकि यीशु मसीह अपनी ही शक्ति से पुन: जीवित हो गये (यूहन्ना 10:17-18)।

यीशु मसीह की मृत्यु परमेश्वर द्वारा दी गयी व्यवस्था की मांग के अनुसार दण्ड था।

बाइबल में मृत्यु परमेश्वर द्वारा दी गयी व्यवस्था को मांग के अनुसार दण्ड है (रोमियो 6:23)। यह बहुत महत्वपूर्ण बात है कि यीशु स्वाभाविक मृत्यु द्वारा या किसी दुर्घटना द्वारा नहीं मरे। उसकी हत्या नहीं हुई, परन्तु वह परमेश्वर की व्यवस्था की मांग के अनुसारे मरा।

- उसे मनुष्यों की व्यवस्था के अनुसार मृत्युदण्ड दिया गया। उसे किसी ऐसे अपराध के लिए मृत्युदण्ड नहीं दिया गया जो उसने खुद किया हो। उसके विरोधी भी उसमें कोई दोष नहीं ढूँढ़ पाये, वर कई, पिन्तुस पिलातुस ने उसे निर्दोष तक घोषित किया! लेकिन फिर भी पिन्तुस पिलातुस ने यीशु को मृत्यु की सज़ा सुनाई क्योंकि वह जानता था कि यहूदी लोग उसके राजनीतिक पद को किस तरह नुकसान पहुँचा सकते हैं। एक निर्दोष को सजा देकर पिलातुस ने खुद को और सम्पूर्ण मानव न्याय को भी दोषी ठहरा दिया।
- यीशु को ईश्वरीय व्यवस्था के अनुसार मृत्युदण्ड मिला। ठीक उसी समय पर परमेश्वर पिता ने अपने पुत्र को संसार के पापों के कारण मृत्यु दण्ड दिया। उसकी मृत्यु के द्वारा, यीशु मसीह पापों के प्रायश्चित के लिए बलि और पशुबलि बना, जिसके द्वारा उसने संसार के उन लोगों के पापों के प्रति परमेश्वर पिता के पवित्र व न्यायी क्रोध को दूर कर दिया, जो यीशु मसीह को ग्रहण करते हैं।

यीशु की मृत्यु क्रूस के द्वारा हुई ।

यह बहुत महत्वपूर्ण है कि यीशु मसीह का न तो सिर कलम किया गया और न ही उसे पत्थरवाह करके मारा गया, वह उसे क्रूस की सजा दी गयी। क्रूस, यहूदियों द्वारा नहीं वरन रोमी सरकार द्वारा दी जाने वाली सज़ा थी। उसे इतना बदनाम माना गया, कि उसे रोमी नागरिक नहीं माना गया, वरन उसे मानवजाति का मैल समझा गया और सबसे नीच अपराधी व गुलाम के रूप में गिना गया। क्रूस की मृत्यु के द्वारा यीशु ने, मानवीय व्यवस्था की सारी मांगों को पूरा किया। लेकिन उसके साथ ही साथ उसने परमेश्वर की भी सारी मांगों को पूरा किया : वह एक शापित मृत्यु मरा, क्योंकि गलातियों 3:13 में लिखा है,"शापित है वह व्यक्ति जो काठ पर टांगा जाता है" उसने अपने ऊपर हमारे श्रापों को लेकर हमें व्यवस्था के श्रापों से मुक्त कर दिया(गलातियों 3:10,13)।

3. यीशु की मृत्यु का अभिप्राय।

यीशु मसीह की मृत्यु के क्या परिणाम हैं?

यीशु मसीह हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिए मरा (1 पतरस 2:24; 1यूहन्ना 4:10)

पाप का प्रायश्चित करने के लिए पाप को दण्डित करने की परमेश्वर की धार्मिक व पवित्र मांगों को सन्तुष्ट करना जरूरी था जिसके तहत पापियों के प्रति उसका धर्मी गुस्सा दूर होना था। यीशु की मृत्यु एक प्रायश्चित बलि थी, अर्थात एक ऐसा बलिदान जिसने हमारे पापों के प्रति परमेश्वर के क्रोध को दूर कर दिया। यीशु मसीह द्वारा पापों के प्रायश्चित के लिए चढ़ाये

गये बलिदान ने भविष्य में किसी भी प्रकार के बलिदान की जरूरत को समाप्त कर दिया। अराधनालयों की आराधना और मन्दिरों में बलि लाना सब बेकार हो गया। यह बात मन्दिर के पर्दे के ऊपर से नोचे तक फट जाने से साबित हुई (मत्ती 27:51)। अब जो कोई जन यीशु मसीह पर विश्वास करता है वह परमेश्वर की आत्मा के माध्यम से सीधा परमेश्वर से बातचीत कर सकता है (इफिसियों 2:18)।

मसीह पापियों को धर्मी ठहराने के लिए मरे (1 पतरस 3:18; रोमियो 5:8-9)।

पापियों को धर्मी ठहराने का अर्थ उसे परमेश्वर की निगाहों में निर्दोष साबित करना है। परमेश्वर पापियों को क्षमा करता है, उसे अनन्त दण्डाज्ञा से मुक्त करता है, उसे पूरी तरह से धर्मी घोषित करता और स्वीकार करता तथा सदा के लिए उसके साथ धर्मी के तौर पर व्यवहार करता है। आपके बदले में यीशु की मृत्यु ही एकमात्र रास्ता था जिसके द्वारा आपका परमेश्वर के साथ मेल मिलाप हो सकता था।

ख. याद करना व पुनरावलोकन करना

1) एक खाली कार्ड या अपनी कॉपी के एक पेपर पर बाइबल की आयत को ***लिखें।***
2) सही तरीके से बाइबल के वचनों को ***याद करें।*** पाप का प्राश्चित: रोमियों 5:8
3) ***पुन: अवलोकन!*** दो दो के जोड़े में बटकर, एक दूसरे के द्वारा कि गयी पिछली आयत का मूल्यांकन करें।

4	**बाइबल अध्ययन** (70मिनट) *[कलीसिया]* **कलीसिया का मिशनरी कर्तव्य: मत्ती 28:18-20**

बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों का इस्तेमाल करते हुए मत्ती 28:18-20 तक का एक साथ मिलकर अध्ययन करें।

कदम 1. पढ़ें। परमेश्वर का वचन

पढ़ें। आइये हम मिलकर मत्ती 28:18-20 को एक साथ पढ़ें।
आइये हम बारी-बारी से निर्धारित सभी वचनों को पढ़ें।

कदम 2 खोजें निरीक्षण

ध्यान दें। **इस अनुच्छेद में कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?**
या इस अनुच्छेद के किस सत्य ने आपके हृदय या मन को छुआ?
लेखा रखें। एक या दो बातों की गहन पड़ताल करें, जो आपको समझ आयी हो। उन पर सोच विचार करें तथा अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
बांटे। (समूह के सदस्यों द्वारा दो मिनट विचार करने तथा उन विचारों को लिखने के बाद, उन विचारों को बारी बारी आपस में बांटें) आइयें हम आपस में बारी बारी बांटे कि हमें क्या प्राप्त हुआ है।
(लोगों द्वारा खोजी गयी बातों को बांटने के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है। याद रखें के प्रत्येक लघु समूह के लोग अलग बातों को बांट सकते हैं, यह जरूरी नहीं है कि सभी सदस्यों द्वारा बाँटे गयें विचार एक ही समान हों।

28:18-19

खोज 1. वह अधिकार जो काम को पूरा करने में साथ देता है।

पद 18 में, यीशु ने कहा कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इस अर्थ है कि सारे जगत में उसकी शक्ति से बढ़कर और कोई भी शक्ति या अधिकार नहीं है। शैतान को बांध दिया गया है और वह जाति जाति के लोगों को मसीह के पास आने से नहीं रोक सकता है। इसी कारण प्रभु यीशु मसीह सारे मसीहियों को सबसे बढ़ा काम दे सके, अर्थात

जाओं और सारे संसार के लोगों को चेला बनाओ। हो सकता है कि मेरी नज़रों में यह काम काफी बढ़ा या कठिन हो। यदि मैं इस काम को अपनी ताकत से ही पूरा करने का प्रयास कर रहा हूँ तो निश्चय ही यह काम मेरे लिए मुश्किल साबित होगा। यदि मैं अपनी बाहर जाकर अपनी ही ताकत पर लोगों को चेला बनाना चाहता हूं तो, सम्भवत: यह मेरे लिए एक असम्भव कार्य बन जाए। यह मेरे लिए एक अद्‌भुत सच्चाई है, यीशु मसीह मुझे किसी काम को करने की योग्यता दिये बिना वह काम नहीं सौंपते हैं। जब प्रभु यीशु मसीह मुझे कोई काम सौंपते हैं तो वह उस काम को पूरा करने के लिए अनुग्रह, शक्ति और बुद्धि भी प्रदान करते हैं। वह ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि सारा अधिकार उन्हें दिया गया है।

28:19-20

खोज 2. लक्ष्य को पूरा करने की प्रतिज्ञा।

पद 19 में यीशु मसीह ने मुझे सर्वश्रेष्ट काम करने की आज्ञा दी। उसने मुझे जाकर सारी जाति के लोगों को चेला बनाने की आज्ञा दी। यह हर एक मसीही कलीसिया का मिश्नरी लक्ष्य है। लेकिन उसने मुझ इस काम को करने के लिए अकेला नहीं भेजा। पद 20 में उसने इस यात्रा में मेरे साथ चलने का वायदा किया। उसने मुझसे यह वायदा किया है कि वह जगत के अन्त तक हर दिन मेरे साथ रहेगा। यह मेरे लिए एक खुशखबरी व अद्‌भुत सत्य है कि वह मुझे कोई भी काम अकेला पूरा करन के लिए सौंपता है बल्कि वह हमेशा मेरे साथ रहता है। जब प्रभु यीशु मसीह मुझे कोई काम देते हैं, तो मेरे काम को पूरा कराने के लिए वह मेरे साथ रहते हैं। वह इसलिए ऐसा कर पाते हैं, क्योंकि वह मृतकों में से जी उठे हैं और आज भी जीवित हैं।

कदम 3 प्रश्न	व्याख्या

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद क आधार पर किस विषय पर प्रश्न पूछना पसन्द करेंगे?

आईये, हम मत्ती 28:18-20 को पढ़कर समझने की कोशिश करते हैं आर फिर भी जो बातें समझ न आएं उनके लिए प्रश्न पूछे।

लेखा ले: सबसे पहले एक स्पष्ट प्रश्न को तैयार कर लें। फिर उस प्रश्न को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

बाटे (समूह द्वारा दो मिनट तक सोच विचार करने तथा अपने विचार लिखने के पश्चात, प्रत्येक सदस्य अपने प्रश्न को अन्य सदस्यों के साथ बांटे)

चर्चा करें: (इसके पश्चात कुछ प्रश्नों का चुनाव करने के बाद, समूह में चर्चा करने के द्वारा उन प्रश्नों का जवाब देने का प्रयास करें। (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले सम्भावित प्रश्नों व चर्चाओं के उदहारण दिए गये है)

28:18

प्रश्न 1. क्या कभी ऐसा कोई समय रहा जब यीशु के पास ये सारे अधिकार न रहे हों?

ध्यान दें।

उसकी देहधारण से पूर्व।

यीशु मसीह के देहधारण करने से पहले ही यीशु के पास सारे अधिकार थे, क्योंकि उसने सारी वस्तुओं और जीवों को अपने वचन की शक्ति से सृजा (यूहन्ना 1:1-3; यूहन्ना 17:1-5; कुलुस्सियों 1:16-17; इब्रानियों 1:3)।

उसके देहधारण के दौरान।

धरती पर बिताये गये अपने समय के दौरान यीशु ने अपने आपको उस महिमा से खाली कर दिया था जो स्वर्ग में परमेश्वर पिता के साथ उसके देह धारण से पहले थी (यूहन्ना 17:5) और उसने कमज़ोर मानवीय स्वभाव को धारण कर लिया जैसा हमारा स्वभाव है (फिलिप्पियों 2:6-8)। उसने अपनी असीमित शक्तियों का इस्तेमाल करने से अपने आपको रोक लिया। लेकिन फिर भी उसने कई बार प्रकृति, दुष्टात्माओं,बीमारियों,मृत्यु और उसके शत्रुओं पर इन शक्तियों का प्रयोग किया(मत्ती 11:5)।

उसकी मृत्यु पुनरूत्थान व उसके उठाये लिए जाने के पश्चात।

उसके स्वर्ग में उठा लिए जाने व परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर विराजमान होने के बाद, उसे सारे जगत की वस्तुओं पर अधिकार मिल गया। उसे उद्धार के काम को पूरा करने के बदले मं इनाम स्वरूप उसकी शक्ति का इस्तेमाल करने का अधिकार दिया गया है।

दानिय्येल 7:13-14 में हम पढ़ते हैं, " मैं ने रात में स्वप्न में देखा,और देखो, मनुष्य की सन्तान सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था, और वह उस अति प्राचीन के पास पहुँचा, और उसको वे उसके समीप लाए। तब उसको ऐसी प्रभुता,

महिमा और राज्य दिया गया, कि देश देश और जाति जाति के लोग और भिन्न भिन्न भाषा बोलनेवाले सब उसके अधीन हों; उसकी प्रभुता सदा तक अटल और उसका राज्य अविनाशी ठहरा।(साथ में पढ़ें यशायाह 9:7)।

प्रकाशित वाक्य 5:1-14 में, यीशु मसीह को परमेश्वर पिता की ओर से एक पुस्तक दी गयी जो भीतर और बाहर दोनों ओर से लिखी हुई थी,क्योंकि केवल उसे ही उस पुस्तक की मुहरों को खोलने का अधिकार दिया गया है। इसका मतलब यह है कि उसने केवल उन ही बातों को प्रगट किया है जो पुस्तक में पहले से लिखा था। इस पुस्तक में यीशु मसीह के एक जयवन्त(प्रकाशित वाक्य 6:2) के रूप में जीतने के लिए सवार होने से लेकर अन्तिम न्याय (प्रकाशितवाक्य 6:12-17)के समय से तक सारे प्रमुख व सक्रिय सिद्धान्तों को लिखा गया है, अर्थात यीशु मसीह के पहले आगमन से लेकर दूसरे आगमन तक।

फिलिप्पियों 2:9-11 में हम पढ़ते हैं कि "इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसका वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है, कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।" यीशु मसीह की पहली आमद से ही वह हर देश, जाति और भाषा के लोगों को बचाता है।

उसके दूसरे आगमन पर

मत्ती13 अध्याय के 24-25 में दर्शाये गये उसके दूसरे आगमन के समय में, जगत के सार लोगों पर उसका निर्णायक अधिकार प्रगट हो जाएगा, विशेष तौर पर सारे मृतकों के पुन:जीवित हो जाने से, सारी मानवजाति के न्याय से और धरती के पूरी तरह से नये हो जाने से। यीशु मसीह नयी धरती पर परमेश्वर के नये व सिद्ध राज्य में सदाकाल के लिए राज्य करते रहेगें(2पतरस 1:11; प्रकाशितवाक्य 22:1)।

28:19

प्रश्न 2. इस आज्ञा में पाँच क्रियाएं आपस में कैसे जुड़ती हैं?

टिप्पणियां। यीशु मसीह की आज्ञा है " इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और पिता , और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी हैं मानना सिखाओ। यहां पर इसलिए शब्द बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि यह शब्द पद 18 में किये गये यीशु के दावे को पद 19 से जोड़ता है। पिछले पद में उसके द्वारा किये गये सर्वश्रेष्ठता के दावे से हमें यह पता चलता है कि उसके द्वारा दिया गया काम कि तुम सारे जगत में जाओं पूरा हो सकता है और पूरा होगा। चेले बनाये जा सकते थे बल्कि सारे जगत में चेले बनाये गये। लेकिन बिना उसके अधिकार व उपस्थिति के कुछ भी कर पाना असम्भव था। लेकिन अब उसके अधिकार व उसकी उपस्थिति के साथ, जो कुछ उसने हमें करने की आज्ञा दी वह सम्भव हो गया और वह काम जरूर पूरा भी होगा।

वे पाँच क्रियाएं हैं जाओ, चेले बनाओ, बपतिस्मा दो, सिखाएं और आज्ञा मानें। जिसमें प्रमुख क्रिया चेला बनाना है। इस क्रिया की मूल भाषा बताती है कि यह आज्ञा लगातार मान्य है। यीशु मसोह के चेलों को लगातार संसार में हर जगह और हर काल में (अर्थात यीशु मसीह के प्रथम आगमन से द्वितीय आगमन के बीच में)मसीह के चेले बनाते रहना चाहिए। तीन क्रिया अर्थात जाओ, बपतिस्मा दो, और चेला बनाओ मूल भाषा में मुख्य क्रिया पर निर्भर है, और उनमें आज्ञाओं की ताकत भी होती है। लोगों को यीशु का चेला बनाने में बहुत से काम शामिल होते हैं, जिसके लिए पहल करने तथा अत्यधिक प्रयास करने की जरूरत पड़ती है।

यीशु मसीह के चेलों को उनके पास लोगों के आने का इन्तज़ार नहीं करना चाहिए,वरन पहले कदम बढ़ाकर संसार के हर देश तक जाना चाहिए। यीशु मसीह के चेलों ने उनके पास जाकर सुसमाचार प्रचार करना, उन्हें पश्चाताप तथा विश्वास करने के लिए बुलाना और उन्हें भी यीशु मसीह के चेले बनने की चुनौति प्रदान करनी चाहिए। यीशु मसीह के चेलों ने विश्वासियों को पानी के द्वारा उस एक परमेश्वर के नाम से बपतिस्मा देना चाहिए जिसने अपने आप को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से प्रगट किया है। चेलों ने लोगों को यीशु मसीह की आज्ञाओं को मानना सिखाना चाहिए।

28:19

प्रश्न 3. यीशु का चेला क्या है?

टिप्पणी। एक चेले केवल अपना धर्म बदलने वाले से बढ़कर है? एक चेला यीशु मसीह का अनुयायी और विद्यार्थी है । उसको मन, हृदय और उसकी इच्छाएं यीशु मसीह में लिप्त हो गयी है। यीशु मसीह ने स्वयं अपने चेलों के गुणों के बारे में बताया, जिसे हमने अपने दूसरे शिक्षा सत्र में पढ़ा था(देखें मॅनुएल2,अध्याय 23)।

सार के तौर पर कहें तो, एक चेला यीशु मसीह का ऐसा अनुयायी होता है जो यीशु का अनुसरण करते करते सीखता है। उसमें खास गुण होते हैं जो प्रगट करते हैं कि उसका मन,हृदय व और इच्छाएं पूरी तरह से यीशु मसीह के लिए समर्पित है। अत: सारी दुनिया में जाकर यीशु मसीह के चेले बनाने का अर्थ है मतलब उन्हें यीशु मसीह का अनुयायी या उनके शिष्य बनाना है। इसका अर्थ है कि उनकी कुछ विशेष गुणों को प्राप्त करने में मदद करना, जो यीशु मसीह की शिक्षाओं के अनुसार एक चेले में होनी चाहिए।

28:19

प्रश्न 4. उन्हें किन देशों में जाकर सुसमाचार सुनाना चाहिए?

टिप्पणीयां। बाइबल में पाये जाने वाले देश वर्तमान देशों के समान नहीं है। आज एक देश बहुत बड़ा हो सकता है, जिसमें बहुत सी भाषाएं बोलने वाले लोग और सीमावर्ती संस्कृतियां हो सकती है। आज हम किसी देश या राष्ट्र के बीच में मुश्किल से कोई भिन्नता देख पाते हैं।

लेकिन बाइबल में बाइबल का अर्थ एक जाति से हुआ करता था जिनके अपने रीति-रिवाज़ हुआ करते थे, जो उनमें एकता के भाव को उत्पन्न करता था। इन समूह के लोगों में समानता होतो थी और उनके जीने का तरीका भी एक ही जैसा होता था। किसी जाति को वास्तव में एक सामान्य भाषा,मूल और इतिहास से परिभाषित किया जाता है। या किसी जाति को उसके सामान्य व्यवसाय, आर्थिक स्थिति जैसे किसानों या कारखानों में कार्यकर्ता या रसोईयों या विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा जाना जाता है। या उन्हें उनकी सामान्य भूगोल विद्या और धर्म की वजह से पहिचाना जाता है।

लेकिन वर्तमान काल में एक ही देश के अन्दर अनकों प्रकार के लोगों के समूह और ऐसी बहुत सी जातियां रहती है। और यीशु मसीह कहते हैं कि उसके चेलों को हर जाति, हर भाषा के लोगों के पास जाकर उन्हें यीशु मसीह को चेला बनाना है। उन्हें केवल दूसरे देशों में ही नहीं जाना है बल्कि उन्हें उन देशों की विभिन्न जातियों में जाकर उन्हें यीशु मसीह का चेला बनाना है।

28:19

प्रश्न 5. मसीहियों को बपतिस्मा क्यों दिया जाता है?

ध्यान दें । यद्यपि पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देना यीशु मसीह की ज़िम्मेदारी है (मत्तो:11-12), लेकिन पानी द्वार बपतिस्मा देना यीशु के चेलों की जिम्मेदारी है (मत्ती 28:19)। उनको बपतिस्मा देना एक आज्ञा है। जिन लोगों ने सुसमाचार सुना और विश्वास किया, उन्होने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया(अर्थात नया जन्म या परमेश्वर का आत्मा पाया)। उन्हें पानी का बपतिस्मा दिया जाना जरूरी है। बपतिस्मा प्राप्त करने के लिए पश्चाताप करना तथा परमेश्वर के वचनों को स्वीकार करना जरूरी है (प्रेरितों के काम 2:38-41)।

बाइबल में पानी द्वारा दिया जाने वाना बपतिस्मा एक प्रत्यक्ष क्रिया है जो आत्मा के साथ बपतिस्मा की वास्तविकता को प्रगट करता है (प्रेरितों 10:47-48)। यह यीशु मसीह द्वारा कलीसिया को दिया गया एक चिन्ह व मुहर है कि परमेश्वर ने विश्वासियों को अपने परिवार में मिला लिया है; कि यीशु मसीह अर्थात परमेश्वर के पुत्र ने उसे छुड़ाया लिया है; और परमेश्वर का आत्मा उसमें वास करता और उसे शुद्ध करता है।

पानी का बपतिस्मा एक बाह्य चिन्ह है जो विश्वासी के भीतर हुए पवित्र आत्मा के कामों को प्रगट करता है, जिसे हम पवित्र आत्मा का बपतिस्मा (मरकुस 1:8; 1 कुरिन्थियों 12:13) या पवित्र आत्मा द्वारा नया जन्म भी कहते हैं(तीतुस)।

पानी का बपतिस्मा, पवित्र आत्मा के आन्तरिक निश्चय की बाह्य मुहर है (रोमियों 8:15-16;2 कुरिन्थियों 1:21-22; इफिसियों 1:13-14) कि विश्वासियों के सारे पाप क्षमा हो गये हैं(प्रेरितों 2:28; 22:16), कि वह परमेश्वर की दृष्टि में 100% धर्मी ठहर चुका है (रोमियो 6:3.7), कि अब वह परमेश्वर की वाचा के अनुसार चुने लोगां के परिवार का हिस्सा है(गलातियों 3:26-29) और परमेश्वर ने जो काम उसमें शुरू किया है वह उसे पूरा भी करेगा (यूहन्ना 17:12; फिलिप्पियों 1:6)।

पानी का बपतिस्मा अन्त में एक समर्पण व उदघोषण भी है कि विश्वासी ने पापमय संसार से अपना नाता तोड़ लिया है (रोमियों 6:3,6,13,19), अब उसका रिश्ता बाइबल के त्रीएक परमेश्वर के साथ जुड़ गया है और अब वह यीशु का चेला बन गया है (मत्ती 28:19)।

28:20

प्रश्न 6. नये मसीहियों को आज्ञापालन करना क्यों सिखाया जाता है?

ध्यान दें। यीशु मसीह के चेलों के लिए सारी जाति के लोगों को यीशु मसीह द्वारा दी गयी सारी आज्ञाओं को पालन करवाना अनिवार्य है। क्योंकि यीशु की शिक्षाओं की जड़ें बाइबल के इतिहास में छुपी हुई हैं, इसलिए चेलों को लोगों में सम्पूर्ण बाइबल की सच्चाईयों का प्रचार करना चाहिए। प्रेरितों 20:27 में, पौलुस कहता है कि,"क्योंकि मैं परमेश्वर के पूरे अभिप्राय को तुम्हें पूरी रीति से बताने में न झिझका।"

इसके अलावा यीशु ने अपने चेलों को केवल सत्य को सिखाने की आज्ञा नहीं दी वरन उनसे उन्हें सत्य का पालन करना सिखाने की लिए भी कहा। यीशु मसीह के सच्चे चेलों में यीशु मसीह की शिक्षाओं का पालन करने का गुण भी पाया जाता है। जो सच्चाई या सिद्धान्त उन्होंने सीखे हैं उन्हें उसका अभ्यास भी करना चाहिए। उनके मन,हृदय तथा इच्छाओं ने सत्य को स्वीकार करना चाहिए, ताकि वे सत्य में बने रहें। मत्ती 7:21,24 व फिलिप्पियों 4:9 के अनुसार, ज्ञान और आज्ञाकारिता अवियोज्य हैं।

28:19

प्रश्न 7. क्या यीशु चाहते हैं कि हर एक मसीही उसका चेला बने?

ध्यान दें। जी हां। केवल यीशु मसीह पर विश्वास करना, लेकिन उसकी बातों को न मानना और उसका अनुसरण करना यीशु मसीह को नहीं भाता। वह चाहता है कि हर एक मसीही उस पर विश्वास करे, उसका अनुसरण करे,उससे सीखे तथा एक चेले के गुणों में बढ़े। संक्षेप में,यीशु मसीह चाहते हैं कि हर एक मसीही उस पर विश्वास करे तथा उसकी आज्ञाओं को माने।

28:19

प्रश्न 8. क्या संसार के सारे मसीही जन उसके चेले बन जाते है?

ध्यान दें। नहीं। पहले ही हम देखते हैं कि यीशु के जीवन काल में ही, बहुत से नामधारी चेलों ने यीशु का साथ छोड़ दिया था, क्योंकि उनको लगा कि यीशु की शिक्षाएं बहुत कठिन हैं (यूहन्ना 6:66)। जो कोई व्यक्ति अपनी मुंह से यीशु को अपना 'प्रभु' कहता है वह परमेश्वर के राज्य में नहीं जाएगा, क्योंकि यीशु के साथ तो उसका कोई व्यक्तिगत सम्बन्ध है ही नहीं (अर्थात वह उसे जानता नहीं) और क्योंकि वह पिता के बताए कामों को नहीं करत (मत्ती 7:21)। जैसा की विवाह के समारोह के दृष्टान्त में है, हर कोई व्यक्ति जो विवाहतोत्सव में पहुंच गया वहां होने के लायक नहीं होता। जिन लोगों ने यीशु को धारण नहीं कर रखा है वे अन्तिम न्याय के दिन बाहर फेंक दिये जाएंग (मत्ती 22:11-14 ; रोमियों 13:14)!

28:19

प्रश्न 9. क्या सारे मसीहियों को शिष्य निर्माण कार्य में लग जाना चाहिए?

ध्यान दें। जी हां, मत्ती 28 में, यीशु ने अपने ग्यारह चेलों को यह आज्ञा दी। उन्हें जाकर सारी जातियों के लोगों को चेला बनाना है। वे जाकर यीशु मसीही की बताई शिक्षाओं को सिखाने के द्वारा चेले बनाते हैं। आज्ञाओं में से जो एक आज्ञा नये चेलों को माननी चाहिए वह है"जाकर सारी जातियों के लोगों को चेला बनाओ"। अत: चेला बनाने की आज्ञा संसार भर के सारे मसीहियों के लिए है। हर एक मसीही को सबसे पहले खुद यीशु मसीह का चेला बनना चाहिए और बाद में दूसरे मसीहियों की यीशु का चेला बनने में सहायता करनी चाहिए। यह आज्ञा किसी भी स्थानीय मण्डली की आज्ञा से बढ़कर है। हर एक स्थानीय कलीसिया को दूसरी जगह जाकर चेले बनाना चाहिए और हर एक मसीही को दूसरे लोगों को चेला बनने में सहायता करनी चाहिए।

28:20

प्रश्न 10: चेले बनाने वाले लोगों से यीशु ने क्या वायदा किया।

ध्यान दें। यीशु मसीह ने वायदा किया कि "और देखो,मैं जगत के अन्त तक तुम्हारे साथ हूँ"। यहां पर 'देखो' शब्द का सही मतलब है 'याद रखो'। यीशु मसीह ने अपने चेलों से प्रतिदिन उसकी प्रतिज्ञाओं को याद रखने का आग्रह किया। 'हमेशा' को मूल भाषा में 'जीवन भर' कहा गया है। इसका अर्थ है कि यीशु मसीह ने अपने चेलों के साथ दिन में आते जाते साथ रहने का वायदा किया था। यह पर एक के बाद एक दिन पर ज़ोर दिया गया है। हर दिन की अपनी की परीक्षाएं व मुश्किलें होती हैं, लेकिन इस बात का निश्चय है कि हर दिन यीशु अपने चेलां के पास रहने वाला है। यह सिलसिला उसकी दूसरी आमद तक लगातार चलने वाला है, जब वह इस काल का अन्त करेगा और एक नये काल की शुरूआत नये आकाश और नयी पृथ्वी के साथ करेगा। यीशु मसीह ने अपने चेलों से प्रतिज्ञा की, कि जब उसके चेले दूसरी जातियों के लोगों में जाकर चेले

बनाने के द्वारा उसकी आज्ञाओं का पालन करेंगे तो वह भी सेवकाई में पूरे दिन हमेशा उनके साथ होगा। वह अपने पूरे प्रेम, शक्ति और बुद्धि के साथ उनके संग रहेगा। यीशु मसीह के प्रेम से, चेले उन लोगों को प्रेम कर सकते हैं जो दूसरों द्वारा नाश कर दिये गये। यीशु मसीह की बुद्धि के साथ चेले इस जटिल संसार में व्यवहारिक व बुद्धिमानी के निर्णय ले सकते हैं। यीशु मसीह की शक्ति के द्वारा चेले इस संसार की बुराईयों व दुष्ट की शक्तियों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

28:18-20

प्रश्न 11. अतः कलीसिया का मिश्नरी लक्ष्य क्या है?

ध्यान दें। कलीसिया का मिश्नरी लक्ष्य मत्ती 28:18-20 में दिया गया है। हर एक मण्डली को अलग भाषा, रीति रिवाज, व्यवसाय या सामाजिक स्तर के लोगों के पास जाना चाहिए और उन्हें यीशु मसीह का चेला बनाना चाहिए। यह मिश्नरी कार्य बिलकुल सम्भव है, क्योंकि स्वयं यीशु मसीह अपनी पूरे अधिकार के साथ हमारे साथ हैं।

कदम 4. उपयोग इस्तेमाल

ध्यान दे: इस अनुच्छेद में प्राप्त सच्चाईयों में से मसीही लोग सम्भवत: किन का इस्तेमाल कर सकते हैं?

बांटे व लेखा रखें: आईये हम मत्ती 28:18-20 के आधार पर एक दूसरें के साथ विचार विर्मश करें, और जो कार्य सम्भव है उनकी सूचि बनाएं।

ध्यान दें: किस सच्चाई के विषय में परमेश्वर चाहते हैं कि आप सम्भवत: उसे अपने निज जीवन में प्रयोग करें?

लिखें: इस अभ्यास को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को नि:संकोच दूसरों के साथ बाँटे।

(याद रखें कि प्रत्येक समूह भिन्न सत्य का प्रयोग करेगा, और हो सकता है कि वह एक ही सच्चाई को अलग तरीके से इस्तेमाल करं। सम्भावित प्रयोगों की सूची निम्नलिखित है)

1. मत्ती 28:18-20 से कुछ सम्भावित प्रयोगों के उदहारण ।

28:18 कभी भी दूसरे लोगों व कठिन परिस्थितियों से न डरें, क्योंकि यीशु मसीह को पृथ्वी पर सारा अधिकार दिया गया है।

28:18 विश्वास करें कि जो काम प्रभु यीशु मसीह ने आपको करने के लिए दिया है वह आप कर लेगें, क्योंकि उसके पास सारा अधिकार है।

28:19 जहां लोगों ने कभी सुसमाचार नहीं सुना है, हिम्मत करके वहां जाएं और सुसमाचार सुनाएं।

28:19 नये मसीहियों को बाइबल की महत्वपूर्ण सच्चाईयों से अवगत कराएं और उन्हें यीशु की आज्ञा मानना सिखाएं।

28:20 हर दिन याद रखें कि यीशु अपनी पूरी बुद्धि व शक्ति के साथ आपके संग है।

2. मत्ती 28:18-20 से व्यक्तिगत प्रयोगों के उदाहरण।

मैं पहल करते हुए अपने शहर के उन लोगों के पास जाकर सुसमाचार सुनाना चाहता हूँ जिन्होंने कभी नहीं सुना हो। मैं जाकर प्रचार करना और उन्हें सुसमाचार सिखाना चाहता हूँ। मैं उन्हें यीशु मसीह का चेला बनाना चाहता हूँ। मैं लगातार मसीहियों को यीशु की आज्ञाएं मानना सिखाना चाहता हूँ। हर एक सप्ताह हम नये मसीहियों को अपने साथ उन लोगों के बीच में सुसमाचार प्रचार करने के लिए ले जात हैं जिन्होने पहले कभी सुसमाचार न सुना हो। हमारे साथ साथ वे मसीह की शिक्षाओं को मानना सीख जाते हैं।

कदम 5. प्रार्थना प्रतिउत्तर

आइये हम उन सच्चाईयों के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें मत्ती 28:18-में सिखाई हैं।

(जिन बातों को आपने अपने अध्ययन के दौरान सीखा उनका प्रार्थना के द्वारा प्रतिउत्तर दें। एक या दो वाक्यों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। याद रखें कि लोग अलग अलग समूहों में अलग मुद्दों पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[प्रतिक्रियाएं]*
		दूसरों के लिए प्रार्थना करें

दो या तीन के समूह में होकर प्रार्थना करते रहें। एक दूसरे तथा संसार के सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ मत्ती 28:18-के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: निर्गमन 7:14-10:29 के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. याद करें। पाप का स्वभाव: रोमियों 5: 8 । रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

5- चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।